भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या : 924

गुरुवार, 27 जुलाई, 2023 को उत्तर देने के लिए

चंद्रयान मिशन II और III के बीच की देरी

924. श्री अशोक कुमार मित्तलः

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) चंद्रयान मिशन II और चंद्रयान मिशन III के बीच हुई लंबी देरी के क्या कारण हैं;

(ख) क्या 2014 से इसरो द्वारा अन्य अंतरिक्ष अनुसंधान की पहल की गई है;

(ग) पिछले चार वर्षों के दौरान इसरो को अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए आवंटित धनराशि का ब्यौरा क्या है;

(घ) अब तक आवंटित धनराशि का कितना उपयोग किया गया है और उससे जुड़ी परियोजनाओं का ब्यौरा क्या है; और

(ङ) क्या भारत के लिए अंतरिक्ष के क्षेत्र में अनुसंधान की गति को बढ़ाने के लिए कदम उठाया जा सकता है?

उत्तर

कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय
तथा प्रधान मंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री
(डॉ. जितेन्द्र सिंह) :

(क) चंद्रयान-2 के प्रदर्शन से अर्जित अनुभव और विस्तृत उड़ानोपरांत डेटा विश्लेषण को ध्यान में रखकर चंद्रयान-3 को संरूपित किया गया है। मिशन के संरूपण में विशेषज्ञ समिति के निष्कर्षों और संस्तुतियों; व्यापक जमीनी अनुकरण और विस्तृत परीक्षणों से संवर्धित दृढ़ता से उत्पन्न आवश्यक सुधारात्मक कार्रवाइयों का समावेश किया गया है। पूर्वोक्त पहलुओं और विभिन्न समितियों द्वारा विस्तृत समीक्षा के बाद, चंद्रयान-3 अंतरिक्षयान सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, शार से दिनांक 14 जुलाई, 2023 को 14:35 बजे एल.वी.एम.-3 पर प्रक्षेपित किया गया।

(ख) जी, हां। वर्ष 2014 से इसरो द्वारा अनके अंतरिक्ष अनुसंधान पहलें की गई हैं। इनमें शामिल हैं:

1. एल.वी.एम.-3 और एस.एस.एल.वी. जैसे प्रक्षेपण रॉकेट का विकास एवं प्रचालन
2. भू-प्रेक्षण, उपग्रह संचार और उपग्रह नौवहन की पूर्ति हेतु अनेक उपग्रहों का निर्माण एवं प्रक्षेपण
3. वैज्ञानिक प्रयोगों एवं प्रौद्योगिकी प्रदर्शन हेतु प्रायोगिक मंच के रूप में पी.एस.-4 का प्रयोग

...2/-

4. अंतरिक्ष विज्ञान एवं अन्वेषण मिशन, यथाः

   क. मंगल कक्षित्र मिशन (वर्ष 2014 में कक्षा में अंतःक्षेपण; मंगल में खास प्रकार के विविध प्रेक्षण पहली बार किए गए)

   ख. एस्ट्रोसैट (वर्ष 2015 में प्रक्षेपित)

   ग. चंद्रयान-2 (वर्ष 2019 में प्रक्षेपित)

   घ. चंद्रयान-3 (वर्ष 2023 में प्रक्षेपित)

   ङ. आदित्य-एल1 मिशन (प्रक्षेपण हेतु तैयार किया जा रहा है)

   च. एक्सपोसैट मिशन (प्रक्षेपण हेतु तैयार किया जा रहा है)

5. स्वदेशी समानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम अर्थात् गगनयान से संबंधित प्रौद्योगिकियों का विकास

(ग) एवं (घ) बजट अनुमान में आवंटित निधियों और "अंतरिक्ष अनुसंधान" के मुख्य शीर्ष के अंतर्गत किए गए व्यय का ब्यौराः

(रु. करोड़ में)

वित्त वर्ष	बजट अनुमान आवंटन	वास्तिवक व्यय
2019-20	12438.26	12982.22
2020-21	13443.30	9468.35
2021-22	13922.59	12447.68
2022-23	13667.00	10045.05

"अंतरिक्ष अनुसंधान" के अंतर्गत, (i) पी.एस.एल.वी, जी.एस.एल.वी., एल.वी.एम.-3, एस.एस.एल.वी. जैसे प्रक्षेपण रॉकेट विकास कार्यक्रम (ii) सुदूर संवेदन, संचार और नौवहन के क्षेत्र में उपग्रह विकास कार्यक्रम (iii) अंतरिक्ष विज्ञान एवं ग्रहीय अन्वेषण (iv) गगनयान कार्यक्रम (v) विभिन्न इसरो केंद्र/यूनिटों में अनुसंधान अवसंरचना और अनुसंधान एवं विकास कार्यकलाप (vi) विभाग के अधीन स्वायत्त निकायों को अनुदान सहायता (vii) शिक्षा-जगत में अनुसंधान एवं विकास को सहायता।

(ङ) सरकार ने भारत के लिए अंतरिक्ष के क्षेत्र में अनुसंधान की गति को बढ़ाने के लिए पहले से ही अनेक कदम उठाए हैं।

इसरो, अंतरिक्ष विभाग के अंतर्गत, अंतरिक्ष परिवहन, अंतरिक्ष अवसंरचना, अंतरिक्ष अनुप्रयोग और समानव अंतरिक्ष उड़ान जैसे अंतरिक्ष क्षेत्र के सभी शीर्षों में समग्र क्षमता के विकास की दिशा में परियोजना-उन्मुखी रीति से कार्य करता रहा है।

इसके अलावा, अंतरिक्ष क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास को संवर्धित करने के लिए शिक्षा-जगत और उद्योगों के माध्यम से अनुसंधान को सक्षम बनाने के लिए अनेक व्यवस्थाओं का भी सृजन किया गया है। 'रिस्पॉन्ड' नामक इसरो प्रायोजित अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत देश के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों को शामिल करके अनेक अनुसंधान एवं विकास परियोजनाएं चल रही हैं।

पुनः, अंतरिक्ष के क्षेत्र में निजी उद्यमों को संवर्धित भागीदारी के लिए अंतरिक्ष से संबद्ध सभी शीर्षों में आद्योपांत कार्यकलाप आयोजित करने की अनुमति देकर इस क्षेत्र को भी खोल दिया गया है।

इस संबंध में, अपने अंतरिक्ष कार्यकलापों के लिए गैर सरकारी कंपनियों को इसरो सुविधाओं के उपयोग में सक्षम बनाने, इन-स्पेस तकनीकी केंद्र की स्थापना, मेंटरशिप सहायता, बीज निधि योजना और उद्योग सम्मेलनों के आयोजन सहित, उनका संवर्धन करने तथा ठोस सहायता पहुँचाने के लिए इन-स्पेस का सृजन किया गया है।

***